[रस]

परिभाषा – किसी काव्य, नाटक, उपन्यास अथवा कहानी को पढ़ने/सुनने/देखने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

"रस काव्य की आत्मा है।"

भरतमुनि के अनुसार –

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति।"

सभी रसों की परिभाषा :–

"जब ↓ ..... नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि द्वारा पुष्ट होता है तब ↓ ..... रस की निष्पत्ति होती है।"

Tricks

[रस का नाम]		[स्थायी भाव]
शृंगार	→	रति → प्रेम
करुण	→	शोक → 'इष्ट' की नाश से उत्पन्न व्याकुलता।
शाँत	→	निर्वेद → वैराग्य (सांसारिक अनासक्ति)
वीर	→	उत्साह → उल्लास
हास्य	→	हास → डर
अद्भुद	→	विस्मय/आश्चर्य – अलौकिक वस्तु का दर्शन होने से उत्पन्न चित्तवृत्ति।
भयानक	→	भय – डर
रौद्र	→	क्रोध – गुस्सा,
वीभत्स	→	जुगुप्सा/घृणा – अरुचिकर वस्तु को देखकर
वात्सल्य	→	वत्सलता/पुत्राविषयक रति
भक्ति	→	देवविषयक रति

[रसों की संख्या]

पंचम वेद

मूल रस — 8 (आ० भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में बताया)

नवाँ रस — शांत रस
दसवाँ रस — वात्सल्य रस
ग्यारहवाँ रस - भक्ति रस
} बाद में जोड़े गए

परन्तु वर्तमान में मुख्य रूप से नवरस कहे गए हैं।
अतः मूल कुल रसों की संख्या -9 ही मानी जाती है।

Note ⟶ भक्ति एवं वात्सल्य रस को शृंगार के ही अन्तर्गत रखा गया है।

स्थायी भाव :—

सहृदय के हृदय में हमेशा विद्यमान रहने वाले भाव। कुल संख्या ⟶ (9)

विभाव :— जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण स्थायी भाव जाग्रत एवं उद्दीप्त हो।

दो प्रकार —

1- **आलम्बन वि.** — जिसके कारण स्थायी भाव उत्पन्न हो।
(A) आलम्बन — " "
(B) आश्रय — जिसके हृदय में स्थायी भाव उत्पन्न हो वो।

2- उद्दीपन विभाव —
स्थायी भावों को तीव्र एवं उद्दीप्त करने वाला कारण।
आलम्बन की चेष्टा एवं देशकाल वातावरण आदि उद्दीपन वि० कहलाते हैं।

अनुभाव —

आश्रयगत आलम्बन की वे चेष्टाएँ, जो उसे स्थायी भाव का अनुभव कराती हैं, 'अनुभाव' कहलाती हैं।

④ प्रकार

(i) **कायिक** — शरीर की कृत्रिम चेष्टा / आँख, भौं, हाथ आदि शरीर के अंगों की चेष्टाएँ।

(ii) **मानसिक** - हर्ष, विषाद आदि मन की चेष्टाएँ।

(iii) **आहार्य** - वेशभूषा द्वारा प्रदर्शित भाव।

(iv) **सात्विक** - सत्त्व का अर्थ — प्राण / शरीर के सहज अंग विकार।

संचारी / व्यभिचारी भाव —

स्थायी भावों को पुष्ट करने वाले / स्थायी भावों के सहयोगी / 33 होते हैं।